ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—16/11/2020 दोहा एकादश

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ग्यान।

मोल करो तरवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।८।।

सज्जन की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए।

तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी म्यान का । जातिगत और जन्म आधार पर किसी को श्रेष्ठ मानने से कबीरदास ने स्पष्ट इंकार कर दिया। किसी भी जाति में ज्ञानी हो सकता है। ऊँची जाति से सबंध रखने वाला कोई भी व्यक्ति भ्रष्ट हो सकता है। कबीर साहब के इस दोहा का मूल भाव है कि कोई व्यक्ति किस जाति/सम्प्रदाय और क्षेत्र का है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्या वह ज्ञानी है ? यह काम की बात है। जैसे मोल तलवार का किया जाता है कि वे कितनी धारदार और कीमती है /
~~~~~~~~~~

टिकाऊ है, उसकी म्यान का कोई विशेष मूल्य नहीं होता है, वैसे ही गुरु के ज्ञान की कीमत होनी चाहिए ना कि गुरु की जाति और सम्प्रदाय की।

माला फेरत जुग गया फिरा न मन का फेर ।

कर का मनका डारिदे मन का मनका फेर ।।९।।

इस दोहे में कबीर जी कहते हैं कि भगवान का नाम लेते -लेते, माला जपते-जपते तुमने युगों-युग बिता दिए। सारा जीवन तुमने माला के मनके घुमाने में लगा दिया। लेकिन अब तक तुम्हें अपने मन की शांति की प्राप्ति नहीं हुई। जिस मन की शांति के लिए तुम सदा भगवान की माला जपते रहते हो वह शांति तुम्हें आज तक नहीं मिली इसलिए इस हाथ में पकड़े मनके को जिसे तुम माला में डालकर घुमा रहे हो इन्हें छोड़ कर अपने मन के मनके का ध्यान करो। अपने मन को शुद्ध करो, अपने विचार में शुद्धता लाओ तभी तुम्हें मन की शांति की प्राप्त होगी।

सोना, सज्जन, साधु जन, टूट जुड़ै सौ बार ।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के, ऐके धक्का दरार ॥ १० ॥

कबीर के अनुसार सज्जन और साधु सोने की तरह होते हैं ।सोना यदि सो बार भी तोड़कर पुनः बनाया जाए तो भी उसकी चमक फीकी नहीं पड़ती हैं उसी प्रकार सज्जन पुरुष हर अवस्था में समान रहते हैं. इसके विपरीत दुष्ट और स्वार्थी लोग कुम्हार के मिट्टी के घड़े की तरह होते हैं जो एक बार टूटने पर दुबारा कभी नहीं जुड़ता.
तिनका कबहुँ ना निन्दिये जो पाँयन तर होय ।

कबहुँ उड़ी आँखिन परै , पीर घनेरी होय ।।११।।

इस दोहे में कबीर जी कभी भी किसी की निंदा न करने की सलाह देते हुए कहते हैं कि चाहे कोई कितना भी तुच्छ क्यों ना लगे हमें कभी भी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए और उदाहरण देते हुए कबीर जी कहते हैं कि जैसे एक तिनका जिसकी कीमत कुछ भी नहीं होती और जो सदैव पांव के नीचे पड़ा रहता है उसकी भी निंदा नहीं हमें करनी चाहिए क्योंकि जब कभी वह तिनका हवा में उड़कर आंख में चला जाता है तो असहनीय पीड़ा देता है। इसीलिए किसी को भी कम नहीं आंकना चाहिए और किसी की भी निंदा नहीं करनी चाहिए हर कोई अपनी जगह श्रेष्ठ है।

धन्यवाद

छात्र कार्य-

दिए गए प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”